मूक चेहरे बच्चों के

हमारे आस-पास
जी रहे हैं हजारों बच्चे
एक आपराधिक भाव लिए
अपने चेहरों पर
जब वे छोटे थे
हम उनके पथ-प्रदर्शक थे
पता नहीं, कब छूट गई
हमारे हाथ से उनकी अंगुली
खो गए वे, भीड़ में कहीं।
सालों बाद
वे मिले हमें
ढाबों पर कप-प्लेट धोते
फुटपाथ पर बूट-पॉलिश करते
रेल्वे प्लेटफॉर्म पर पड़े फटेहाल
और सुधारगृह में सुधरने के लिए
अपने चेहरों पर आपराधिक भाव लिए वे,
जमीन में गड़े जा रहे थे
उनकी आंखों में सवाल भी नहीं था
कि, वे यहां क्यों आ गए ?
पर, यह सवाल हम सबके बीच है
कि, वे यहां कैसे पहुंच गए ?

बस्ते में दुनिया

बस्ते में बसती है
एक पूरी दुनिया उसकी
बस्ते में कॉपी-किताब, स्लेट, पेंसिल ही नहीं
कागज की मुड़ी पुड़िया में हैं
इमली, बेर।
उसकी कॉपी के पन्नों में
फरफराते हैं, चिड़ियों के रंगबिरंगे पंख
कपड़े में लिपटे हैं
कौड़ी, सीप, चूड़ियों के रंगीन टुकड़े।
किताब की छाती पर
उसने लगा लिया है अपनी पसंद का एक चित्र
उन्मुक्त आकाश में
डूबता-उतरता है
सीपी-शंखों के साथ सागर की गहराई में।
फिर धरती पर आ कदम बढ़ाता है
धरती के विस्तार में।

(पिछले करीब 20 वर्षों से विभिन्न स्वयं सेवी संगठनों में कार्य। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही हैं।)

अनुपमा तिवाड़ी,
ए-108, रामनगरिया जेडीए स्कीम, जगतपुरा, जयपुर, राजस्थान